ॐ

राम संदेश

भक्ति, ज्ञान एवं कर्मयोग की आध्यात्मिक पत्रिका

पावन हों शिक्षा संस्कार
शुद्ध आचरण का आधार

काम काज हो या व्यापार
सभी जगह अच्छा व्यवहार

मित्र पड़ोसी घर परिवार
संबंधों में निश्छल प्यार

यदि हो पाए तो संसार में
होगा सुख शांति प्रसार

वर्ष 67 | जनवरी-मार्च 2019 | अंक 1

रामाश्रम सत्संग, गाज़ियाबाद

विषय सूची

क्रमांक		पृष्ठ
1.	भजन	01
2.	परमार्थ पथ और संतमत साधना *लालाजी महाराज*	02
3.	इन्सानी ज़िन्दगी का आदर्श *डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज*	10
4.	उपदेश *अनमोल वचन*	15
5.	सेवा *परमसंत डॉ. करतार सिंह जी साहब*	18
8.	होली के अवसर पर पूज्य गुरुदेव का विशेष सन्देश	24
9.	युसुफ हुसेन रयी *प्राचीन मुस्लिम संतों के जीवन चरित्र*	26

नव वर्ष की बधाई

आप सभी भाई-बहनों को नववर्ष 2019 की बहुत-बहुत बधाई। ईश्वर से प्रार्थना है कि आप सपरिवार सुखी, स्वस्थ और संतुष्ट रहें और ईश्वर प्रेम में बढ़ते उत्साह और आनन्द से दिनोंदिन प्रग. ति करते रहें।

आपने जो इस अवसर पर मेरे और मेरे परिवार के प्रति शुभकामनायें व्यक्त की हैं, उनके प्रति हम अति आभारी हैं तथा सभी को सप्रेम धन्यवाद देते हैं।

– शक्ति कुमार सक्सेना

राम ॐ संदेश

संस्थापक
ब्रह्मलीन परमसंत डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज
संरक्षक
ब्रह्मलीन परमसंत डॉ. करतार सिंह जी
सम्पादक
डॉ. शक्ति कुमार सक्सेना
(सर्वोच्च आचार्य एवं अध्यक्ष)

वर्ष 67 जनवरी–मार्च 2019 अंक–1

बसंत चढ्या फूली बनराये

एह जीय जन्त फूले हर चित्त लाये,
इन विध एहे मन हरया होये।
हर हर नाम जपै दिन राती,
गुरुमुख हौं मैं कढै धोये।
सतगुरु बानी सबद सुनाये,
एह जग हर्‌या सतगुर भाये।
फल फूल लागे जा आपे लाये,
मूल लग्गै ता सतगुर पाये।
आप बसंत जग सब वाड़ी,
'नानक' पूरै भाग भगत निराले।।

–गुरु अमरदास

परमसंत महात्मा रामचन्द्र जी महाराज

परमार्थ पथ और संतमत साधना

किसी काम में, चाहे वह दुनियाँ के मुत्तलिक हो चाहे परलोक के, तरकीब दरकार है और तरकीब का होना बिला किसी सिद्धांत और उसूल के मुश्किल ही नहीं बल्कि नामुमकिन है।

जब आदमी में कोई ख़ास कमज़ोरी होती है या बहुत सी कमज़ोरियाँ होती हैं, तो कमज़ोरी के नुक्स को दूर करने के लिए तदबीरें करता है। तदबीरों की सूरतें ख़ासकर के कर्म, उपासना जैसी कई सूरतें हो गयीं और होती जाती हैं। इन्हीं के मेल–जोल और विभाजन से हज़ारों मत–मतान्तर, पंथ और संप्रदाय क़ायम हो चुके हैं और न मालूम कितने पैदा होंगे।

अब गौर करके सब सूरतों की तहक़ीक़ात (जाँच) की जाये तो सिर्फ नाम और रूप तो अलग–अलग दिखाई पड़ेंगे, लेकिन हर सूरत में सिद्धांत और उसूल अपनी ज़ाती (मूल) और असली सूरत में छुपा हुआ मौजूद मिलेगा और किसी फ़रीक़ (संप्रदाय) को– जहां तक मेरा ख्याल है– अगर हठधर्म को दूर कर लें तो वह इंकार नहीं कर सकेंगे कि मूल सिद्धांतों में कोई ख़ास भेद नहीं है। हाँ, मतभेद का होना लाज़मी है क्योकि हर शख्स और जमात की फ़ितरत (प्रकृति) और आदतें अलग–अलग होती हैं।

समझने और समझाने के लिए अगर हम लोग अपने ही मत के सिद्धांतों को आगे रखकर ग़ौर और विचार करके नतीज़ों को देखें तो सिद्ध हो जायेगा कि यही बुनियादी उसूल सब मज़हबों में घुसे हुए हैं और कोई फ़िरक़ा (संप्रदाय) इनसे बचकर नहीं रह सकता।

हिन्दुओं के वेदान्त का फ़िल्सफा (दर्शन)– वेदान्त को सबसे ऊँचा साबित किया गया है। सब क़िस्म के फ़िल्सफा वाले बहस कर–कराकर, ख़ूब दलीलों को करके, आख़िरकार इस जगह चुप होकर बैठ जाते हैं जहाँ 'वेद का अंत' हो जाता है। यानी मुरक्किब (कंपाउंड) और मिलौनी चीज़ों

से बहुत दूर पहुँचते हैं। और जहां इस मामूली कारोबारी अक़्ल का दख़ल नहीं रहता, इस हालत को महबियत की कैफ़ियत या फ़ना की हालत (लय की अवस्था) बोलते हैं।

ब्रह्म–विद्या के जानने वाले इन्हीं कैफ़ियतों (दशाओं) और हालतों को द्वैत, अद्वैत, विशिष्टाद्वैत–द्वैताद्वैत, वग़ैरह के नामों से पुकारते हैं, और इस्लाम धर्म के सूफ़ी संत इन्हीं कैफ़ियतों को तौहीद–वजूदी, शहूदी, ऐहदियत, वाहिदियत में तक़सीम (विभाजित) करते हैं। ग़रज़े कि इन ऊँची हालतों पर पहुँचने के लिए जो कोशिश की जाती है वह साधनों के ज़रिये से होती है। उन साधनों की इब्तदाई तक़सीम (प्रारम्भिक विभाजन) सिर्फ चार है, जिनको साधन चतुष्टय कहते हैं। बिना इन चार साधनों के कोई अभ्यासी आख़िरी मंज़िल पर नहीं पहुँच सकता।

पहला साधन– 'तमीज़' (या विवेक) है, जिसमें हस्त और नेस्त की तमीज़ हो जाती है। इसका मतलब यह है कि इस बात का ज्ञान हो जाता है कि इस दुनियाँ में कौन–कौन सी चीज़ें फ़ानी या मिट जाने वाली हैं और तबदील होने वाली हैं और कौन सी चीज़ ऐसी है जो हमेशा क़ायम रहती है, बल्कि कभी नाश और तबदील नहीं होती। इस साधन के आते ही उसके बाद ही दूसरा साधन आ जाता है।

दूसरा साधन– इस दूसरे साधन को 'वैराग' (नफ़रत–अज–दुनियाँ) कहते हैं। जब यह तमीज़ (ज्ञान) हो गयी कि फलां–फलां चीज़ तबदील होने वाली है तो उससे ख़्वामख़ाह कुदरतन (स्वाभाविक रूप से) नफ़रत पैदा होने लगेगी। तबियत का लगाव उस चीज़ से हटता जायेगा और नित्य या हमेशा रहने वाली चीज़ की तरफ़ तवज़्ज़ो ज़्यादा होती जावेगी।

तजुरबे (अनुभव) का लाभ– दुनिया से नफ़रत या लगाव का कम हो जाना, इन तरीक़ों से ही होता है। या तो दौलत के पदार्थ ख़ूब भोग लेने से जब हसरतों का पंजा ख़ूब जकड़ लेता है, उस वक्त तबियत का रुझान कम हो जाता है, या दोस्तों–रिश्तेदारों की अदावत (विमुखता) के साबित होने पर या फिर अपने लोगों की मौतों के हो जाने पर और अपनी मौत का नज़ारा पेश आ जाने पर दुनियाँ से तबियत हट जाती है।

लेकिन यह तबियत का हटाव पक्का और मुस्तक़िल (स्थायी) नफ़रत नहीं है, क्योकि जब तक ये चीज़ें भोग न ली जावें, उस वक्त तक वासनाओं और ख्वाहिशों का बीज अन्दर दबा हुआ पड़ा रहता है और किसी वक्त और सामान मिल जाने पर फिर उभर खड़े होने का अंदेशा रहता है। बिना मन मरे हुए और उनका साधन–सामान साफ़ हुए सच्चा वैराग पैदा नहीं होता। सिर्फ़ तजुरबा ही ऐसा उम्दा ज़रिया है जो असली वैराग पैदा करता है।

अब तजुरबा और साधन की दो सूरतें जो ऊपर बयान की गयी हैं वह सही तो हैं, मगर उनका तरीक़ा और इस्तेमाल किसी पंथ ने किसी तरह किया और कराया है और किसी ने दूसरी तरह पर।

वेदांत के मानने वालों ने दूसरे साधन को यानी वैराग पैदा होने के लिए यह तरक़ीब अख़्तियार की कि पहले सिर्फ़ यह ख़्याल करना शुरू किया जाए कि माया मिथ्या और नाशवान है और असली चीज़ ब्रह्म है। इस तरह ख़्याल से यह साधन शुरू किया, और इस ख़्याल को इस क़दर पुख़्ता किया और कराया कि किसी तरह यह बात दिमाग़ और हाफिज़े (स्मरण–शक्ति) से हट ही न सके। लेकिन यह सिर्फ़ ख़्याली पहलू से किया गया। असली पहलू को कोई दख़ल नहीं दिया, हालांकि असली पहलू एक तरह पर तो ज़रूर आ गया की कुब्बते–ख़्याल के पुख़्ता (इच्छा–शक्ति) को दृढ करने का साधन किया, जो वाक़ई तौर पर सही है।

मगर संत मत वालों ने कुब्बते तमीज़ी या विवेक शक्ति (जो सिर्फ़ ख़्याल से ही पैदा की जाती है) वह असली तजुरबे के न होने की वजह से पुख़्ता नहीं होती, यही सही माना। अगर ख़ूब गौर करके देखा जाए तो विवेक और वैराग कोई साधन नहीं है बल्कि किसी ख़ास साधन या साधनों के नतीज़े हैं। जब तक इन्द्रियों, मन, बुद्धि, और चित्त को साफ़ न किया जावेगा और मांझा न जावेगा उस वक्त तक सबसे ऊपर वाले तत्व यानी अहंकार की शक्ति किस तरह से तेज़ और साफ़ हो सकेंगी ? विवेक शक्ति ख़ालिस अहंकार तत्व के मातहत है। इसलिए पहले साधन विवेक को साफ़ करना, फिर विवेक के नतीज़े दूसरे साधन वैराग को लेकर संत मत में शुरुआत कराई गयी।

वेदान्त का तीसरा साधन– षट–सम्पत्ति– वेदान्त का तीसरा साधन और संतमत के पहले साधन के छह भाग हैं जिनको 'षट संपत्ति या छह तहसीलात' (शम, दम, वग़ैरा) कहते हैं। मतलब यह है कि इनके अमल से छह क़िस्म के फ़ायदे होते हैं।

1) **शम –** पहली संपत्ति या हासिल का नाम 'शम' यानी तस्क़ीने क़ल्ब है जिसके मायने हैं कि दिल का ठहराव हो जावे, दिल इधर–उधर न बहके, अपने केंद्र पर रहे। दिल का ठहराव दो तरह पर होता है– वैराग और अभ्यास से। साधु लोग अभ्यास को पहले लेते हैं, जिससे कि वैराग ख़ुद–ब–ख़ुद पैदा हो जाता है। लेकिन वेदान्ती लोग वैराग के ख़्याल को मज़बूत करने को ही अभ्यास मानते हैं। वैराग, नेति–नेति मार्ग (मनफ़ा) का तरीक़ा ज्ञानियों का है, जो किसी क़दर मुश्किल है। अभ्यास योग और उपासना सरल है क्योंकि वह ऐती मार्ग है। नेति मार्ग में हर चीज़ को छोड़ने का अमल किया जाता है और ऐति मार्ग में क़बूल और अख़्तियार किया जाता है, यानी किसी एक ही चीज़ में दिल को लगा लेते हैं। जब इस अमल में दिल एक तरफ लग जाता है तो निहायत आसानी से बाक़ी और चीज़ों से कुदरती तौर पर दिल हट जाता है और उनकी तरफ़ मुख़ातिब (आकर्षित) नहीं होता। 'शम' के अलावा पाँच और सम्पत्तियाँ इस तरह हैं–

(२) **दम –** वाह्येन्द्रिय वृत्तियों का निरोध करके हरेक इन्द्रिय को उसके व्यापार से आज़ाद करना 'दम' यानी दमन कहलाता है।

(३) **उपरति –** इन्द्रियों का दमन हो जाने पर विषयों की ओर उनकी पुनरावृत्ति न होने देने को 'उपरति' कहते हैं। एक बार निरोध करने पर भी बार–बार विषयों की ओर दौड़ना इन्द्रियों का स्वाभाविक धर्म है। इसलिए सदा उनकी लगाम खींचते रहना चाहिए। इसी को उपरति कहते हैं।

(४) **तितिक्षा –** हर अच्छी–बुरी बात को बर्दाश्त करना यानी हमेशा द्वन्द सहन करने की शक्ति को तितिक्षा कहते हैं। हानि–लाभ, शीत–गर्मी, सुख–दुःख, राग–द्वेष वगैरा द्वन्द कहलाते हैं। स्नान–सन्ध्यादि कर्म

करते समय गर्म–सर्द की जो बाधा होती है उसकी कोई परवाह नहीं, हमारा कर्म पूरा होना चाहिए, और प्रारब्ध के लिहाज़ से पैदा होने वाले सुख–दुःख हमें भोगने ही चाहिए, उनसे कोई बच नहीं सकता। इस तरह की सर्दी–गर्मी, सुख–दुःखादि के सहन करने की शक्ति को तितिक्षा कहते हैं।

(५) **समाधान –** पाँचवा साधन 'समाधान' है। सम्पूर्ण विषयों में सदा शांत रहकर संत मुनियों की वाणी सुनकर, वाक्य–श्रवण में बुद्धि रखना समाधान है।

(६) **श्रद्धा –** छठी सम्पति 'श्रद्धा' है। उसकी व्याख्या यह है कि सतगुरु के उपदेश और उनकी बानियों में लिखे तजुर्बात पर पूरा विश्वास रखना, उसमें कमी न होना श्रद्धा कहलाती है।

शेष पांच सम्पत्तियों का विस्तृत विवरण :–

दम– (इन्द्रिय दमन) और ज़ब्ते–हवास की तफ़सील (व्याख्या) किताबों में बहुत तफ़सील (विस्तार) के साथ दर्ज़ है, उसे देखना चाहिए। हमारे यहां सत्संग में अगर जिज्ञासु या मुरीद गुरुमुख हो तो बिला अभ्यास के शुरु की कुब्बते–कश्फी (खैंच–शक्ति) से ही विवेक, वैराग, ज़ब्ते–हवास (इन्द्रिय दमन) और दिल की सफाई हो जाती है। मोददीब–मुरीद (शिष्ट शिष्य) गुरु–मत होता है और बेअदब मुरीद मनमत। असली बेअदब वह है जो दूसरी ख़्वाहिशात दुनियांवी (सांसारिक इच्छाओं) को साथ लाता है और अगर मुरादें (इच्छाएं) उसकी पूरी न हों, तो चलता फिरता नज़र आता है। उसके इरादे निरे खुदगर्ज़ी (स्वार्थ) के होते हैं।

फिदायी–मुरीद (जो गुरु से प्रेम करता हो) फ़ज़्ली (जिस पर ईश्वर की कृपा होती है) होता है। वह कुछ करता धरता नहीं। फ़ज़्ल (ईश्वर की कृपा) से उसके सब काम सिद्ध हो जाते हैं चाहे वह इस लोक के हों या चाहे परलोक के। फ़िदायी मुरीद उसको कहते हैं कि जो कुछ उसका है या उसमें है वह सब कुछ गुरु के अर्पण करके तन मन धन भी फ़िदा कर डालता है। फ़िदा करना न्यौछावर करने को कहते हैं। और फ़ज़्ली मुरीद उसको कहते

हैं कि उसको अभ्यास से कुछ गरज़ नहीं, ऊपर से ख़ुद–ब–ख़ुद अमृत की धार की बारिश उसके क़ल्ब (हृदय चक्र) पर होती रहती है। इसको 'मुराद' भी कहते हैं। लेकिन ऐसे हज़ारों में एक या दो मुश्किल से होते हैं।

अब 'शम' 'दम' दोनों से फ़ुर्सत मिल गयी। अब तीसरी संपत्ति की बारी आती है। उसको उपरति, उपराम या सेरी कहते हैं। इसके लफ़्ज़ी मायने ख़ात्मे के हैं। इल्लाह (आरम्भ) में उपरति मन की उस हालत को कहते हैं जिसमें लोक और परलोक की कोई तमन्ना नहीं रहती और उसको पूरा यकीन हो जाता है कि ये सब हेच (नाशवान) है। उपरति और वैराग में फर्क यह है कि वैराग में चीज़ों को दोष दृष्टि से देखा जाता है और यह बुरी चीज़ है, इसलिए इससे परहेज़ लाज़िम है। और इसी वजह से संतमत में विवेक से पैदा हुए वैराग की हालत को ग़ैर–मुकम्मिल (अपूर्ण) हालत मालूम करके उसकी तरफ तवज्जो नहीं करते और अपना काम करते चले जाते हैं, जब तक कि मन, इन्द्रियां और बुद्धि साफ़ न हो जाएँ।

उपरति में इन चीज़ों को भोग कर और उनसे सेर (तृप्त) होकर छोड़ देते हैं कि ये हमारे दिल लगाने के लायक नहीं हैं। उपरति में दुनियाँ के भोगों और व्यवहारों से नफ़रत पैदा हो जाती है और फिर बहिश्त–दोज़ख (स्वर्ग–नर्क) के लोकों में जाने से बेपरवाह हो जाती है।

चौथी सम्पत्ति तितिक्षा या तहम्मुल है। यह बर्दाश्त का माद्दा है, जिसमें हर तरह के मान–अपमान की कुछ परवाह नहीं होती। किसी की तारीफ़ या नुक़्ताचीनी (आलोचना) का असर नहीं होता और हर हाल में हनुमान जी महाराज की तरह दीनता–अधीनता का गुण पैदा हो जाता है।

पाँचवी संपत्ति श्रद्धा– यानी गुरु में और दूसरे शास्त्रों में विश्वास होना है। उससे पहले विश्वास और ऐतक़ाद–असली (पूर्ण श्रद्धा) मुरीदों (शिष्यों) में हरगिज़ पैदा नहीं हो सकता। नक़ली ऐतक़ाद होता है, जिसका तजुर्बा सालहासाल (वर्षों) से किया जा चुका है। ख़ामख़्वाह बिना गरज़ और मतलब के ऐसी मौहब्बत गुरु में हो जाना कि जिसकी वजह सोचने से भी समझ में न आवे। उस मंज़िल तक पहुँचने में न मालूम कितनी दफ़ा अभ्यासी

गुरु से बद–ऐतक़ाद (अविश्वासी) होता रहता है, और कभी बा–ऐतक़ाद हो जाता है। यह कैफ़ियत किसी ऐतबार (भरोसे) के क़ाबिल नहीं है। ख़ामोशी से गुरु उस वक्त का इंतज़ार करते रहते हैं और मुरीदों के जोश और ज़ज़्बात के जो इज़हार होते हैं, उनको मुनासिब वक्त के आ जाने तक हूँ हाँ करते रहते हैं। इसी मंज़िल पर पहुँच कर शास्त्रों पर भी असली श्रद्धा पैदा होती है, उनका असली मतलब समझ में आने लगता है।

छठी संपत्ति समाधान या यकसूई है। यह आखिरी किस्म की यकसूई है, इसमें आनंद और गैर–आनंद की तरफ कुछ तवज़्ज़ो और दिलचस्पी बाक़ी नहीं रहती। तव्वकुल, राज़ी–ब–रज़ा, मुक़ामे–हैरत, बाक़ी बा–अल्लाह होना उसके चिन्ह और अलामतें हैं।

चौथा साधन

अब चौथा साधन आता है जिसमें मोक्ष या तलबे–निजात (मुक्ति की इच्छा) का सवाल आता है, जो भक्ति की नज़र से, अमली पहलू की नज़र से, और ज्ञान के नज़र से पैदा हो जाता है।

'वादए वस्ल चूं शबद नज़दीक ! आतिशे शौक़ तेज़ तर गरदद !'

(अर्थात – मिलाप की घड़ी जितनी नज़दीक होती जाती है उतनी ही दर्शन की आग (विह्वलता की ज्वाला) तेज़ होती जाती है।)

अब सिवाय कुर्बत (समीपता) और दीदारे–हक़ (ईश्वर दर्शन) के कोई ख्वाहिश बाक़ी नहीं रहती। जब तक यह हालतें अपने ऊपर न गुज़रें, उनका समझ लेना नामुमकिन है।

इतने बयान से मुमकिन है कि हमारी मतलब–बरारी, तस्क़ीने दिल (दिल की तस्सली) के लिए हो जाये, और वहम या शक़ जो घेरे रहते हैं किसी हद तक उनका निवारण हो जाये। मेरी असली गरज़ इस बयान से यह थी कि अभ्यासी लोग यह समझ लें कि मन के ज़ज़बात (भावनाएं) और कैफ़ियात (वृत्तियों) के समझ लेने के वास्ते विवेक पैदा हो गया। लेकिन अपनी कमज़ोरी और नुक़्स दिखाई नहीं देते हैं और उसके मालूम करने में अभी मुकम्मिल (पूर्ण) नहीं है।

इन ६ किस्म की सम्पत्तियों से जो नतीज़े निकलते हैं और चौसाधनों से नतीज़े हासिल होते हैं, अगर वह मालूम न हों, तो अभी रास्ता दूर है। ख्वाबों, कैफ़ियतों, ज़ज़्बों (स्वप्नों, वृत्तियों, व भावनाओं) और आनंद की अवस्थाओं से दिल को तसल्ली दे देना ऐसा है जैसे कि बच्चों की तसल्ली खिलौनों से हो जाती है।

असली मक़सद (आशय) उसकी कुर्बत (नज़दीकी) और शास्त्रों और बुज़ुर्गों का इत्तबा क़ामिल (पूर्णतया उनके रास्ते पर चलना) का नसीब हो जाना है, और बस।

अब मैं और सब लोग उसके दरबार में प्रार्थना करें कि इस तरह काम बनाने की तौफ़ीक़ (शक्ति+युक्ति) और हिम्मत हमको अता फ़रमावें (प्रदान करें)।

शुक्लां ब्रह्मविचार सार परमामाद्यां जगद्व्यापिनीं
वीणा-पुस्तक-धारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्।
हस्ते स्फटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थिताम्
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्।।

शुक्लवर्ण वाली, सम्पूर्ण चराचर जगत में व्याप्त, आदिशक्ति, परब्रह्म के विषय में किए गए विचार एवं चिन्तन के सार रूप परम उत्कर्ष को धारण करने वाली, सभी भयों से भयदान देने वाली, अज्ञान के अँधेरे को मिटाने वाली, हाथों में वीणा, पुस्तक और स्फटिक की माला धारण करने वाली और पद्मासन पर विराजमान बुद्धि प्रदान करने वाली, सर्वोच्च ऐश्वर्य से अलंकृत, भगवती शारदा (देवी सरस्वती) की मैं वन्दना करता हूँ।

प्रवचन गुरुदेवः डॉ. श्रीकृष्ण लालजी महाराज

इन्सानी ज़िन्दगी का आदर्श

इन्सानी ज़िन्दगी का आदर्श यह है कि अपने आपको पहचाने कि मैं क्या हूँ। ईश्वर को पहचाने और उसमें अपनी हस्ती लय कर दे। जो इस आदर्श का रास्ता दिखलाये वही सच्चा अध्यात्म है। जिसने इस आदर्श की प्राप्ति कर ली है वही सच्चा गुरु है। जो इस आदर्श की प्राप्ति करना चाहता है वही सच्चा भक्त है। जब ऐसा शिष्य हो और ऐसा गुरु हो तभी सच्चे लक्ष्य की प्राप्ति मुमकिन है। दुनियाँ की किसी भी चीज़ की ख्वाहिश रखने वाला, चाहे वो कितनी भी अनमोल क्यों न हो, भक्त नहीं है। गुरु में कितनी ही विद्या क्यों न हो, कितना ही ज्ञान क्यों न हो, कितनी ही शक्ति क्यों न हो, अगर उसने अपने आप को ईश्वर को समर्पण नहीं किया है और खुदी (अहंपना) बाकी है तो वह सच्चा गुरु नहीं है, ऐसा अधिकारी शिष्य हो और ऐसा पूर्ण गुरु मिल जाये, तभी ईश्वर के दर्शन होते हैं। लेकिन शर्त यह है कि शिष्य पूर्ण श्रद्धा के साथ गुरु के बताये हुए रास्ते पर चले और दुनियाँ की बड़ी से बड़ी चीज़ को त्यागने में न हिचकिचाए, बल्कि खुशी से त्याग दे। ऐसा संयोग होने से सफलता प्राप्ति होती है और आदमी क़ामयाब होता है। जितनी देर ऐसी हालत हासिल करने में लगती है उतनी ही देर लक्ष्य प्राप्ति में होती है।

दूसरे, इस रास्ते में हिम्मत की बड़ी ज़रुरत होती है। कभी घबराएं नहीं। बराबर दुनियाँ से लड़ता रहे। दुनियाँ से लड़ना यह है कि दुनियाँ की ख्वाहिशात और धोखे से अपने को अलहदा रखे। परमार्थ और दुनियाँ का हमेशा से बैर रहा है। बिना दुनियाँ को फ़तह किये परमार्थ नहीं मिलता। इसलिए बराबर दुनियाँ से लड़ता रहे और ईश्वर की कृपा और अपनी कामयाबी का पूरा यक़ीन रखे। कोशिश करने पर भी जब कामयाबी नहीं होती तो यह उसका इम्तिहान है। इम्तिहान यह है कि देखा जाता है कि उसमें कितनी

हिम्मत है, उसे अपने लक्ष्य से कितना प्यार है और उसके लिए वह कितनी कुर्बानी कर सकता है।

जितनी दुनियाँ की तक़लीफ़ें होती हैं और जितनी रुकावटें आती हैं और तुमसे दुनियाँ की चीज़ें छीनी जाती हैं, ये सब इम्तिहान हैं तीसरे अगर ईश्वर से भी प्यार है और दुनियाँ से भी प्यार है तो तरक़्क़ी नहीं होती, वहीं का वहीं रहता है। इसलिए ईश्वर के प्यार के साथ दुनियाँ के साथ तर्क (त्याग) भी ज़रूरी है। गुरुजन, ईश्वर प्रेम और दया के सागर हैं। वे हर समय प्यार करते हैं। लेकिन हमें उसका अनुभव उसी वक्त होता है जब भक्त कोशिश करके अपने हृदय को दुनियाँ की ख्वाहिशात और नफ़रत से शुद्ध कर लेता है, इससे पहले नहीं। इसलिए घबराना नहीं चाहिए। बुद्धि, मन और इन्द्रियों का हर समय शोधन करते रहना चाहिए यानी :–

1. हर समय ख्याल रखो कि ईश्वर तुम्हारे साथ है और वह तुम्हारा सच्चा बाप है। प्यार से उसका पवित्र नाम लेते रहो।
2. जिस हालत में भी उसने तुम्हें रखा है, चाहे वो अच्छी है या बुरी, उसमें खुश रहो। दुःख और सुख की दुनियाँ से ऊपर उठो। जब तक ज़िंदगी है, दुःख और सुख तो आते ही रहेंगे। उनका आना ज़रूरी है, लेकिन अपने मन को उससे ऊँचा उठाओ और जो ख़िदमत या फ़र्ज़ ईश्वर ने तुमको सुपुर्द किया है उसे ईमानदारी और सच्चे दिल से पूरा करो। हर समय ख्याल रखो कि यह दुनियाँ ईश्वर की है। हम सब ईश्वर के हैं। जो काम हो रहा है और हम कर रहे हैं, ईश्वर के लिए कर रहे हैं। हम वहीं से आये हैं, उसी की दुनियाँ में रह रहे हैं और हमें वहीं जाना है।
3. अपने ख्यालों को हमेशा शुद्ध करते जाओ। ख्यालों पर क़ाबू पाने की कोशिश करो। अपनी बुद्धि को दुनियांवी ख्यालों से हटाकर सन्तों की वाणी, शास्त्रों के उपदेश और परमात्मा के प्रेम में लगाओ। इन्द्रियों का आचार ठीक करो। कोशिश करो कि इन्द्रियाँ दुनियांवी ग़िलाजत देखने

के बजाय हर जगह ईश्वर को देखें। यही रहनी–सहनी का ठीक करना है।

4. जब–जब मौका मिले सन्तों, गुरुजनों की सेवा करो, उनको खुश करो, उनका सत्संग करो, उनके उपदेशों को हित–चित से सुनो और उन पर अमल करने की कोशिश करो। हमेशा पूरी कामयाबी होगी। कभी निराशा नहीं होगी। यही सच्चा, सीधा और सहज रास्ता ईश्वर को प्राप्त करने का है।

परमार्थ दीनता से बनता है

परमार्थ दीनता से बनता है, केवल बल और पुरुषार्थ से नहीं। जब तक ईश्वर की कृपा न होगी काम नहीं बनेगा। सच बात तो यह है कि तीन बातें सभी सत्संगी भाईयों को याद रखनी चाहिए और इसी से ईश्वर की कृपा प्राप्त होगीः–

1. केवल पुरुषार्थ से परमार्थ नहीं बनेगा।
2. परमात्मा चाहेगा तो करा लेगा केवल यह कहने से भी काम नहीं चलेगा।
3. परमार्थ के लिए प्रयत्न करना होगा और ईश्वर के सामने दीन भी बनना पड़ेगा। दीन बनना यह है कि ईश्वर के हुक्मों पर यानी धर्म और सत् पर चलना। दीनता आने पर ईश्वर प्रेम जगेगा, ईश्वर कृपा होगी और ईश्वर कृपा होने पर परमार्थ बनेगा।

इन्सान नहीं जानता कि वह चाहता क्या है और माँगता क्या है। इन्सान अन्तःकरण के घाट पर बैठा है। जैसी चाह उठती है वैसा ही करना चाहता है। जब परमात्मा के दर्शन की चाह होती है तो वह बेज़ार हो जाता है और ऐसा लगता है कि वह अब इस दुनियाँ की चीज़ें नहीं चाहता। पर उसे मालूम नहीं कि अंदर बहुत सी चाहों के अम्बार (ढेर) के अम्बार लगे हैं। जब उनकी चाह उठेगी परमात्मा की चाह जाने कहाँ चली जायेगी।

अभ्यास यह है कि मन का घाट बदलता जाये और चाहों (इच्छायों) को एक–एक करके नष्ट कर दें। छोड़ना तो यह है कि अन्दर कोई चाह बाकी न रहे। यदी अन्दर की चाहें बनी हुई हैं तो केवल जंगल में जाने से तो वैराग्य नहीं होता। इसलिए संत कहते हैं कि ऐसी ख़्वाहिशों को जो दुनियाँ के विरुद्ध नहीं हैं, पूरा कर देने में कोई आपति नहीं है। परन्तु भोगों को शास्त्रों के कहे मुताबिक (अनुसार) भोगो।

प्रारम्भ में उन्हीं चीज़ों को छोड़ो जो छोटी–छोटी चीज़ें हैं और आसानी से छोड़ी जा सकती हैं। बड़ी चीज़ों को लेने से निराशा होगी। आदतों का कबूल कर लेना आसान है, लेकिन छोड़ना उतना ही मुश्किल। शुरुआत छोटी–छोटी चीज़ों से करो। जब इनमें कामयाबी मिलेगी तो हिम्मत और शक्ति कुछ और बढ़ जायेगी। तब बड़ी–बड़ी चीज़ों से लड़ सकोगे। जब तक कुर्बानी न कर सको तब तक बड़ी–बड़ी चीज़ों से न लड़ो। रास्ता मन और बुद्धि के द्वारा ही चलना है। जब तक मन और बुद्धि शुद्ध और साफ नहीं होंगे तब तक आत्मा दोनों से न्यारी नहीं होगी और ईश्वर के चरणों में नहीं लगेगी।

यह प्रेम का मार्ग है, कर्म मार्ग नहीं है। प्रेम मार्ग बड़ा ही ऊँचा है। इसमें मन और बुद्धि को शुद्ध करते हैं। मन, बुद्धि, चित्त सब आ गये। इन सभी को शुद्ध करने के बाद ईश्वर के दर्शन हो पाते हैं।

जब दो तारों में गाँठ लग जाती है तो वे अलग नहीं हो सकते। उन्हें अलग करने के लिए गाँठ खोलनी पड़ेगी। इसी तरह मन और आत्मा में गाँठ पड़ गई है। जब यह गाँठ खुल जाये तो परमात्मा के दर्शन हों। अज्ञानता ही यह गाँठ है। साँसारिक चीज़ों को अपना समझने लगे और सारी दुनियाँवी चीज़ों में आनन्द देखने लगे यही अज्ञानता है, क्योंकि आनन्द आत्मा में है न कि नियमों में या दुनियाँ में। जब ज्ञान द्वारा यह भ्रान्ति छूट जाती है तब मालूम पड़ता है कि आनन्द तो आत्मा में ही है, इन वस्तुओं में नहीं।

जब आप सोते हैं तो स्वप्न देखते हैं और स्वप्न में सुखी और दुखी होते हैं। परन्तु आँख खुलने पर सब झूठा जान पड़ता है। कभी स्वप्न में आप

राजा बनते हैं और कभी कत्ल किये जाते हैं। राजा बनने पर खुशी होती है और कत्ल होने पर दुःख। यह सभी सुख–दुःख भ्रान्ति के कारण था। इसी प्रकार हम सांसारिक व्यक्तियों के मोह में फँस जाते हैं और भ्रान्तिवश उनमें सुख खोजते हैं।

ख़्याल से ही हम भ्रान्ति में फँसे हैं और ख़्याल से ही छूटेंगे। यह सारी दुनियाँ ख़्याल से ही बनी है और ख़्याल से ही छूटेगी भी। इसीलिए सत्गुरु का ख़्याल बाँधकर इन सभी साँसारिक वासनाओं तथा भोगों को काटते जाओ। यही सबसे नज़दीकी रास्ता ईश्वर को पाने का है।

भक्त भी भगवान को गिरने से बचाता है

उस समय का प्रसंग है जब केवट भगवान के चरण धो रहा है। बड़ा प्यारा दृश्य है, भगवान का एक पैर धोता और उसे निकालकर कठौती से बाहर रख देता है, और जब दूसरा धोने लगता है तो पहला पैर गीला होने से जमीन पर रखने से धूल भरा हो जाता है।

केवट दूसरा पैर बाहर रखता है फिर पहला वाला पैर गीला होने से जमीन पर रखने से धूल भरा हो जाता है। केवट दूसरा पैर बाहर रखता है फिर पहले वाले पैर को धोता है। एक–एक पैर को सात–सात बार धोता है। कहता है– ''प्रभु, एक पैर कठौती में रखिये दूसरा मेरे हाथ पर रखिये, ताकि मैला ना हो।

जब भगवान ऐसा करते हैं तो जरा सोचिये क्या स्थिति होगी, यदि एक पैर कटौती में है तो दूसरा केवट के हाथों में। भगवान दोनो पैरों से खड़े नहीं हो पाते बोले–''केवट मैं गिर जाऊँगा।''

केवट बोला– ''चिंता क्यों करते हो सरकार! दोनो हाथों को मेरे सर पर रखकर खड़े हो जाईये, फिर नहीं गिरेंगे।

भगवान केवट से बोले–''भईया केवट! मेरे अंदर का अभिमान आज टूट गया।''

केवट बोला–'' प्रभु, क्या कह रहे हैं ?''

भगवान बोले– ''सच कह रहा हूँ केवट। मेरे अंदर अभिमान था, कि मैं भक्तों को गिरने से बचाता हूँ पर आज पता चला कि, भक्त भी भगवान को गिरने से बचाता है।''

परमसंत डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज के अनमोल वचन

उपदेश

- असली प्रेम वह है जो दूसरों की भलाई के लिए हो और उसमें अपना स्वार्थ कुछ भी न हो। इस हिसाब से सिवाय ईश्वर के और उन भक्तों के जो उनमें लय हो चुके हैं और ईश्वर के गुण हासिल कर चुके हैं, और कोई सच्चा प्रेम नहीं कर सकता।

❖❖❖❖❖

- परमात्मा ने तुम्हारी तकदीर पहले ही लिख दी है। उसे कोई भी शक्ति मिटा नहीं सकती और न बना सकती है। ज़िन्दगी अपने कर्मों से बनती है। इसलिए अगर ख़ुश रहना चाहते हो तो ईश्वर का नाम और उसी का ध्यान को अपने जीवन का मुख्य कर्तव्य समझो। बाक़ी जो कर्तव्य तुम्हारे सुपुर्द हैं अर्थात् रिश्तेदारों की मदद और उनकी सेवा, उसको पूरा करो। जो काम करो ईश्वर को ख़ुश करने के लिए करो। हर काम में उसका भरोसा रखो। इससे तुम्हें उसका प्रेम मिलेगा और उसी का प्रेम असली प्रेम है। वही जीवन का सार है।

❖❖❖❖❖

- जीवन सुख से बिताने का तरीका यह है कि जो कर्त्तव्य ईश्वर ने तुम्हारे सुपुर्द किया है उसे पूरा करो और कोई ग़रज किसी से न रखो। ईश्वर पर पूरा भरोसा रखो और उसी से प्रेम करो, तभी सुख मिल सकता है, वरना हमेशा दुःखी रहोगे।

❖❖❖❖❖

- कोई किसी को न सुख पहुँचाता है न दुःख। सब उस मालिक की मर्ज़ी से होता है। परमात्मा ही सच्चा बाप है, और वह इतना प्यार करता है कि हम उसका अनुमान भी नहीं कर सकते, परन्तु अंधा प्राणी उसकी तरफ़ देखता भी नहीं, इसीलिए दुःखी है। तुम उसकी ओर देखो तब

तुम्हें मालूम होगा कि वह कितना प्यार करता है। सबका प्यार करना धोखा और स्वार्थ है।

❖❖❖❖❖

- सब प्रार्थनाओं का एक लक्ष्य है और वह यह है कि ईश्वर के चरणों में अटूट अनुराग पैदा हो जाय। संसारी दुःख–सुख आते जाते रहते हैं, परन्तु धर्म पर चलने वाला मनुष्य सदा उनसे ऊँचा उठ जाता है और अपने प्रीतम परमेश्वर से उनका नाता संसार की कठिन से कठिन परिस्थितियों के बीच भी नहीं टूटता। यही सच्चा प्रेम है। यह स्थायी होना चाहिए, अर्थात् चाहे मालिक सुखी रखे या दुःखी उसमें विश्वास न खो बैठे। इस प्रकार का नाता पहले गुरु से जोड़ा जाता है, तत्पश्चात् ईश्वर से।

❖❖❖❖❖

- सन्ध्या में तबियत का लगना इस बात पर निर्भर करता है कि मन दुनिया से कितना उपराम है और परमात्मा से कितनी लगन है। जितनी लगन ज़्यादा है और वैराग्य है उतना ही परमार्थ बनेगा। सत्संग में शामिल होकर भी मन का न लगना इस बात का सबूत है कि अभी मन दुनियाँ की इच्छायें रखता है – परमात्मा से प्रेम नहीं रखता। जितना परमात्मा से प्रेम बढ़ता जायेगा, आदमी दुनिया से उपराम होता जायेगा।

❖❖❖❖❖

- गुरु तुम्हारे अन्दर है और इच्छायें–वासनायें भी तुम्हारे अन्दर हैं। जब इच्छायें सामने आ जाती हैं, गुरु हट जाता है और जब इच्छायें हट जाती हैं, गुरु सामने आ जाता है। जैसे चन्द्रमा चमक रहा है लेकिन आँखों पर उँगली रखने से वह दिखाई नहीं देता। उँगली हट जाने पर चन्द्रमा दिखाई देने लगता है। जब इच्छायें मन में पैदा होती हैं, गुरु प्रेम जाता रहता है। जब इच्छायें जाती रहती हैं, गुरु प्रेम आ जाता है। इसे समझो और मनन करो, असलियत समझ में आ जायेगी।

❖❖❖❖❖

- गुरु की हार्दिक इच्छा होती है कि उसके प्रेमीजन उसके जीवन काल में ही आत्मा का अनुभव करके हमेशा–हमेशा की ख़ुशी हासिल कर लें। मगर, वह मज़बूर है। जब तक इच्छाओं–वासनाओं की समाप्ति नहीं हो जायेगी, आत्मा का अनुभव नहीं हो सकता और हमेशा की असली ख़ुशी नहीं मिलती। इसलिए हमेशा कोशिश करते रहो और अपने मन को इच्छाओं से ख़ाली करते रहो। यही असली रियाज़त और अभ्यास है।

❖❖❖❖❖

- आदमी जो काम करता है उसकी छाप मन पर पड़ती है और जब मन बाहर से हटकर सोते समय या पूजा करते समय अपने अन्तर की तरफ़ घुसता है तब वह शक्लें सामने आती हैं। इसलिए अभ्यासी को चाहिए कि दुनिया के साथ व्यवहार करते समय चौकन्ना रहे और उन्हीं चीज़ों से वास्ता रखे जो ज़रूरी हैं। बेफ़ायदा बातों और कामों में अपने आप को न फँसाये। ऐसा अभ्यास करते रहने से मन सन्ध्या के समय और ख़्याल नहीं उठायेगा। दूसरे, मन को समझाना चाहिए कि यह दुनिया तो थोड़े दिन की है, सब चीज़ों को छोड़ना है, इनसे दिल नहीं लगाना चाहिए वर्ना छोड़ते समय बड़ा दुःख होगा। तीसरे, अपने गुरु या परमात्मा के लिए प्रेम की आग जगाना चाहिए। इसका तरीक़ा यह है कि विरह के पद गायें जावें जिससे तड़प पैदा हो।

कैसे मान लूँ कि तू पल में साथ नहीं
कैसे मान लूँ कि तुझे मेरी परवाह नहीं,
कैसे मान लूँ कि दूर है पास नहीं
देर मैंने ही लगायी पहचानने में मेरे ईश्वर,
वरना तूने जो दिया उसका तो कोई हिसाब नहीं।।
जैसे–जैसे मैं सिर को झुकाता गया
वैसे–वैसे तू मुझे उठाता चला गया।।

प्रवचन परमसंत डॉ. करतार सिंहजी साहब

सेवा

अंग्रेजी में कहते हैं "service leads us nearer to God"। सेवा करने से हम ईश्वर के समीप होते हैं। गुरु नानक देव कहते हैं कि ईश्वर के चरणों में वही व्यक्ति स्वीकार होगा जो सेवा का जीवन व्यतीत करेगा। भगवान कृष्ण गीता में समझाते हैं कि हमारा पूर्ण जीवन सेवा का रूप बन जाए अर्थात् हम ईश्वर में लय होकर कर्मक्षेत्र में जूझे। हम जो भी कर्म हाथ पाँव से, मन से, ज़बान से करें, वे दूसरों के हित में हों, दूसरों की प्रसन्नता के लिए हों तथा उस कर्म और कर्मफल के साथ कोई असक्ति न हो।

हम किसी प्रकार की आशा न रखें। पूजा के रूप में, सेवा के रूप में, आराधना के रूप में, ईश्वर जैसे स्वयं ही आए हुए हों, प्रत्येक काम हम उसकी सेवा समझ कर करते रहें। हम सब पढ़ते हैं, सब जानते भी हैं परन्तु हमारी वृत्तियाँ, हमारे संस्कार ऐसे हैं कि हम जो भी काम करते हैं, आशा रख कर, इच्छा रख कर और अपने लाभ को सम्मुख रखकर ही करते हैं। ऐसा व्यक्ति चाहे कितने समय तक भी साधना करता रहे उसको फल तो मिलेगा क्योंकि प्रत्येक कर्म का फल होता है, परन्तु उसको दरगाह (ईश्वर के दरबार) में प्रवेश नहीं मिलेगा। यह जीवन मिला है ईश्वर प्राप्ति के लिये। गुरुदेव कहते हैं कि एक क्षण के लिए वह नाम मिल जाए यानी ईश्वर का प्रेम मिल जाए, ईश्वर का आशीर्वाद मिल जाए, ईश्वर हमें अपने चरणों में एक क्षण के लिए लगा लें तो हमारे जीवन में पूर्ण क्रांति आ जायेगी। ईश्वर चाहता है कि प्रत्येक व्यक्ति उसके रूप जैसा ही बन जाए, वैसा ही बन जाए जैसा वह स्वयं है। परन्तु मनुष्य ही वैसा नहीं बनता। आदिकाल से ही मनुष्य की वृत्ति प्रतिकूलता की ओर जाती रही है। ईश्वर या सद्गुरु की कृपा जिस पर होती है वही इस रास्ते पर चलता है। बिना ईश्वर की कृपा के इस रास्ते पर नहीं चल सकता और बिना रास्ता चले ईश्वर की प्राप्ति

नहीं हो सकती। इसके लिए ईश्वर की या संतों की कृपा अति आवश्यक है। क्या ईश्वर या सत्गुरु की कृपा किसी अन्याय पर आधारित है ? नहीं, ईश्वर तो न्याय स्वरूप है, न्यायकारी हैं। कमी हमारे में होती है। केवल शारीरिक तौर से गुरु के पास रहने से या उनके दर्शन से कोई विशेष लाभ नहीं होता। जब तक व्यक्ति सत्गुरु या परमात्मा के चरणों में मन से नहीं रहता उसको विशेष लाभ नहीं होता। सेवा के तीन अर्थ हैं, तीन रूप हैं। हाथ–पाँव से सेवा करना अच्छा है, पैसे से सेवा करना उससे कम दर्जा रखती है। लाला जी (परमसंत महात्मा रामचंद्र जी) के मुखारबिंद से निकले हुए शब्द यह हैं कि ''जो गुरु के आदेशों के अनुसार चलता है और अपना जीवन बनाता है, तन, मन, धन उन्हीं का समझते हुए उनके आदेशों के अनुसार चलता है, वही सच्ची सेवा करता है।''

हमारे यहाँ आँख बंद करके बैठ जाने (साधना करने) पर विशेष महत्व नहीं है। वास्तविकता यह है कि हमारा मन कोमल बनना चाहिये। इसमें करुणा उत्पन्न होनी चाहिये, इसमें प्रेम उत्पन्न होना चाहिये, दया उत्पन्न होनी चाहिये और बिना सेवा के ये गुण उत्पन्न नहीं हो सकते। साधना करना अच्छी चीज़ है। ईश्वर का नाम जितना भी लें उतना ही थोड़ा है। परंतु नाम लेते लेते यदि हम अभिमानी हो जाते हैं, हठी हो जाते हैं, हम ईर्ष्या रखते हैं, द्वेष रखते हैं तो यह नाम लेना नहीं है। इसीलिये सभी महापुरुषों ने सेवा को ही आधार बनाया है। सेवा को ही मुख्य रखा है। एक महापुरुष ने मुझसे पूछा कि क्या आपने गुरु महाराज की हाथ–पांव से सेवा की ? हमने कहा कि साहब, वह तो हमसे सेवा लेते ही नहीं थे। जो व्यक्ति हाथ–पाँव से सेवा नहीं करता सम्भावना है कि वह कोरा रह जायेगा। उसके भीतर में सच्ची दीनता नहीं आयेगी, कोमलता नहीं आयेगी। जिसके भीतर में दुःखी जीवों के प्रति दया और करुणा उत्पन्न नहीं होती, वह भले ही आँखें बन्द करके बैठा रहे, उसके अन्दर अहँकार उत्पन्न हो जाता है। सेवा भी दर्जे–ब–दर्जे बढ़ती चली जाती है। पहले माता–पिता की सेवा

करते हैं, फिर अध्यापक की करते हैं, और जब गुरु की सेवा में आते हैं तो संसार की सेवा गुरु रूप समझ कर, ईश्वर रूप समझ कर करते हैं। गुरु महाराज का जीवन देखिए। डाक्टरी का व्यवसाय है। दस–दस, पंद्रह–पंद्रह दिन घर छोड़ कर चले जाते थे भाई–बहिनों की सेवा करने के लिए। दिल्ली के अस्पतालों के बरामदे में गरमी में बैठे रहते थे। अपना व्यवसाय खराब होता था। उन्हें इसकी चिन्ता नहीं थी। मुख्य ध्येय मन में यही रहता था कि जिस मरीज़ को लाये हैं उसका दुःख दूर हो जाय।

अपनी जीवन को साधना रूप बनाना है और सर्वोत्तम सेवा यही है कि गुरु महाराज के आदेशों का बिना किसी संकोच के पालन करना। यह कहना कि परिस्थितियां ऐसी थी, उन्होंने तब ऐसा कहा था, अब वह परिस्थितियां नहीं हैं, अब ऐसा कर लें तो क्या हर्ज़ है, यह मन की सेवा है, गुरु की सेवा नहीं है। गुरु हमारे मन की बात जानते हैं कि हमारे अन्दर आज्ञा पालन का गुण आ गया है या नहीं। जब तक हम स्वयं गुरु की आज्ञा का पालन नहीं करेंगे, हम दूसरों से कैसे आशा रख सकते हैं कि वह हमारी आज्ञा का पालन करेंगे।

तो अति विस्तार से न कहता हुआ, शक्ति बाबू को मैं मुबारकबाद देता हूँ। हमारे यहां रिवायत है कि जो गुरु के आदेश के अनुसार चलता है उसका दीन (परलोक) भी बनता है और उसकी दुनियाँ भी बनती है। पूज्य लालाजी महाराज को किसी व्यक्ति ने पूज्य गुरु महाराज के विषय में पत्र लिखा कि वह तो पारिवारिक जीवन में ही फँसे रहते हैं, यह कैसे आपके लाइले बेटे हैं ? पूज्य लालाजी महाराज गुरुदेव (डा. श्रीकृष्ण लालजी) को बहुत प्यार करते थे। उन्होंने उस पत्र लिखने वाले को समझाया कि हमारे यहां दो रास्ते हैं। संसार के सुखों को, भोगों को, वस्तुओं को उपभोग करते हुए, उसका सार समझते हुए, धीरे–धीरे उससे उपराम होते जाते हैं। और आगे लिखा की मेरे यहां की तालीम यही सिखाती है और पूज्य गुरु महाराज का नाम (श्रीकृष्ण) लेकर लिखा कि वह यही रास्ता अपना रहा है और उसको यह ज्ञान हो जायेगा कि ये जो सांसारिक वस्तुएँ हैं इनमें सार नहीं है। धीरे–धीरे

उनको छोड़ता हुआ एक दिन ऐसा आयेगा कि वह सार को पकड़ेगा, ज्ञान को पकड़ेगा और आत्मस्वरुप हो जायेगा। ख़त लिखने वाले को लिखा कि यदि आपको यह रास्ता पसन्द है तो ठीक है, यदि आपको यह पसन्द नहीं है तो दूसरा रास्ता अपना लें अर्थात् जैसे ही आप आध्यात्म की ओर बढ़े हैं, आप सब कुछ त्याग कर संन्यासी हो जाएँ। यह दूसरा रास्ता कठिन है क्योंकि शरीर से तो त्याग हो जाता है परन्तु मन से त्याग नहीं होता और सच्चे संन्यासी सन्यास की दीक्षा तब तक नहीं देते जब तक व्यक्ति ब्रह्मचर्य, ग्रहस्थ और वानप्रस्थ आश्रम से निकल नहीं जाता अर्थात् जब उस व्यक्ति का मन सांसारिक वस्तुओं से विमुख हो जाता है तब जाकर सन्यास या त्याग की दीक्षा देते हैं। ऐसा नहीं कि जो गेरुए कपड़े पहिन ले वह त्यागी या संन्यासी हो गया। संन्यासी बनना है मन से।

शक्ति बाबू पर पूज्य गुरु महाराज की विशेष कृपा थी। इसी प्रकार बेटी सीता पर भी। यह उन्हीं की इच्छा थी कि दोनों का योग हो। गुरु महाराज का शरीर तो अब है नहीं परन्तु उनका जैसा जीवन था, आदेश थे, उनका अनुसरण करना ही उनकी सेवा है। आपको सब प्रकार की ख़ुशियाँ, प्रसन्नतायें प्राप्त हों सब मिलकर आशीर्वाद दें कि शक्ति बाबू, जैसा गुरु महाराज चाहते थे, जैसी आशायें वह हम सब से रखते थे, वे अपने जीवन में वैसे बन जायें। वास्तविक मकान जो बनना है वह तो हृदय का है। उसकी नींव गुरु महाराज ने रख दी है। और उस नींव पर मकान बनाना इनका काम है। शक्ति बाबू का स्वभाव बड़ी ही सेवा का भाव लिये हुए है। गुरु महाराज का आशीर्वाद उनके हृदय में अंकित है। जैसे वे पक्के दुनियादार बने और फिर दीनदार बने, वही आशा प्रिय शक्ति बाबू से हम सबकी है। इनके मन में बलिदान, सेवा, प्रेम, मधुरता सारे ही गुण एक ओर सांसारिक और दूसरे योग्य संन्यासियों के हैं। मेरी गुरु महाराज के पवित्र चरण कमलों में करबद्ध प्रार्थना है कि शक्ति बाबू का मार्गदर्शन करते रहें। जो गुण उनमें थे उन गुणों से ये प्रेरणा लेते रहें और दुनिया भी खूब भोगें परन्तु गुरुदेव

की प्रसादी समझ कर तथा अपने व्यवसाय से गुरु महाराज की सेवा करते रहें।

मेरा अपना अनुभव अब यह कहता है कि हमें भाईयों की सेवा की तरफ़ अधिक ध्यान देना चाहिये। प्रेम की तरफ़ अधिक ध्यान देना चाहिये। सेवा का ही दूसरा नाम प्रेम है। जब तक भीतर में प्रेम न हो व्यक्ति सेवा नहीं कर सकता। हृदय के मुरझाये कमल तभी खिलेंगे जब हम सेवा करेंगे, निष्काम भाव से, निर्मल भाव से। हृदय में निर्मलता होनी चाहिये, कोई आशा नहीं रखनी चाहिये। गुरु महाराज के बताए हुए रास्ते पर चलना है। उनका जीवन ही हमारा मार्गदर्शन करेगा।

जो परमार्थ के रास्ते पर चला है उसको दूसरों की सेवा करनी चाहिए। पहले परिवार की सेवा करनी चाहिये। परिवार में कुशलता होनी चाहिये, आनन्द व प्रसनन्ता का जीवन होना चाहिये। प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे को योगदान दे। परिवार में प्रसनन्ता होगी तो हम बाहर भी सेवा कर पाएंगे। इसका विस्तार करते चले जाना चाहिये। आसपास–पड़ोस में जो दुःखी लोग हों या जो दुःखी लोग हमारे पास आवें, हमें उनकी सेवा करनी चाहिये। हमारा शरीर, बुद्धि, मन सब ईश्वर के चरणों में लग जाय।

हृदय में राम बसें, मन में प्रेम हो, तन सेवा में लगा हो–– ये तीन काम यदि हम कर सकें तो भगवान कृष्ण का गीता में जो आदेश है उसकी पूर्ति हो जाती है और कुरुक्षेत्र या धर्मक्षेत्र में हम विजय प्राप्त करते हैं। यही हमारे जीवन का लक्ष्य है। ‘‘मन जीते जग जीत” यानी संसार में रहकर अपने मन पर विजय प्राप्त करना है। मन पर तभी विजय प्राप्त कर सकेंगे जब इसको ईश्वर के गुणों के साथ रंग दिया जायेगा। ईश्वर का स्वभाव ही सेवा करना है। देखिए ईश्वर कितनी सेवा सारे संसार की करता है। हम परिवार की सेवा नहीं कर पाते। ईश्वर की पूजा करने का मतलब है कि ईश्वर के गुणों को सराहना और अपनाना। हमारे भीतर में भी ये गुण आने चाहिये। हमारा तन, मन, धन सबके लिए हो। वास्तव में हमारा है ही

क्या ? ईश्वर की ही वस्तु ईश्वर के ही चरणों में अर्पण करनी है। जो इस जीवन में कर जाते हैं वो सफल होकर जाते हैं, जो तिजोरी में बन्द करके जाते हैं वह पीछे झगड़े छोड़ कर जाते हैं। सेवा से मन में आनन्द मिलता है, एक सन्तोष मिलता है, तृप्ति मिलती है। परन्तु आज कल चारों ओर शोषण हो रहा है। जिज्ञासु जो इस रास्ते पर चला है, वह इसके असर से बच तो नहीं सकता है तब भी उसको प्रयास करना है कि इस जीवन रूपी यज्ञ में अपना सर्वस्व ही आहुति दे दे। जब तक मन साफ नहीं होगा, निर्मल नहीं होगा, तब तक मन में कोमलता नहीं आ सकती।

(पूज्य डॉ. शक्ति कुमार सक्सेना जी के नवनिर्मित मकान के गृह प्रवेश के अवसर परः गाज़ियाबाद : दिनांक 8–1–1984 को सद्गुरु डॉ. करतार सिंह जी महाराज का प्रवचन)

एक बार कबीर दास जी हरि भजन करते एक गली से निकल रहे थे। उनके आगे कुछ स्त्रियाँ जा रही थीं। उनमें से एक स्त्री की शादी तय हुई तो उसके ससुराल वालों ने शगुन में एक नथनी भेजी थी।

वह लड़की अपनी सहेलियों को बार–बार नथनी के बारे में बता रही थी कि नथनी ऐसी है, वैसी है। उनके पीछे चल रहे कबीर दास जी के कानों में सारी बातें पड़ रही थीं।

तेजी से कदम बढ़ाते कबीर दास जी उनके पास से निकले और कहा– ''नथनी दीनी यार ने तो चिंतन बारम्बार, और नाक दीनी करतार ने उनको तो दिया बिसार।''

सोचो, यदि नाक ही न होती तो नथनी कहाँ पहनती ? यही जीवन में हम सब भी करते हैं। भौतिक वस्तुओं का तो हमें ज्ञान रहता है, परंतु जिस परमात्मा ने यह दुर्लभ मनुष्य देह दी और उस देह से संबन्धित सारी वस्तुएं, सभी रिश्ते–नाते, उनको याद करने का हमारे पास समय नहीं होता।

होली के अवसर पर पूज्य गुरुदेव का विशेष सन्देश

होली यानी जो हो गया उसे भूल जाना है। आज के दिन अतीत को भूलने की शपथ लेनी चाहिए। वर्षों पहले मेरे साथ किसी ने प्रतिकूल बातें की थीं उसे हम भूल नहीं पाते हैं। बड़ा कठिन है क्षमा करना। भक्त प्रहलाद ने प्रभु से प्रार्थना की है कि ''हे प्रभु! मेरे पिता ने यद्यपि बड़े पाप किये हैं, मेरे एवं अन्यों के साथ, उन्हें क्षमा कर दें।'' क्या हम ऐसा कर सकते हैं ? यह प्रहलाद ही थे जो ऐसा किया। भगवान राम ने ऐसा किया, लक्ष्मण नहीं कर सके। राम राम हैं और लक्ष्मण लक्ष्मण। आज के दिन हमें अतीत की बातों को भूलना है। क्षमा एक महान गुण है। हम लाख पाठ पूजा कर लें किन्तु हमें सफलता नहीं मिलेगी जब तक हम क्षमा करने का गुण नहीं अपनायेंगे। हमें बार–बार प्रयास करते रहना चाहिए क्षमा करने का। इस रास्ते में चतुराई काम नहीं देती। सरलता और कोमलता होनी चाहिए। प्रभु हमें हमारी ग़लतियों के लिए क्षमा कर देते हैं, अतः हमें भी क्षमा का गुण अपनाना होगा। आज के दिन हमें ईर्ष्या और घृणा की होली जलानी है। अग्नि से मनुष्य उतना नहीं जलता है जितना वह ईर्ष्या से जलता रहता है। ऐसे में कभी भी हमें शान्ति नहीं मिल सकती। हमें अतीत एवं भविष्य की बातों को भूलना होगा। वर्तमान में ही हम सफलता प्राप्त कर सकते हैं। हमें पुरानी बातों को भूलकर गले मिलना होगा, सबके गाल में रंग लगाना होगा, मुँह में मिठाई खिलाकर पुरानी बातों को भूलना होगा। गुरुदेव आप सबों को शक्ति दें कि आप उसमें सफल हो सकें। हम भी इस रास्ते में फेल रहे, बार–बार प्रयास के बाद भी, किन्तु फिर भी प्रयास करते रहना चाहिए।

अपनी त्रुटियों को देखना ज्ञान कहलाता है तथा उसे दूर करना तप कहलाता है। अपनी बुराईयों को त्यागे बिना, हृदय को निर्मल किये बिना परमानन्द की प्राप्ति नहीं हो सकती। अपनी बुराईयों को एक–एक कर त्यागने का दृढ़ निश्चय के साथ संकल्प लेना चाहिए, जैसे कम बोलना इत्यादि। गुरु से परमात्मा से उसे त्यागने की शक्ति की कामना तथा अपना

प्रयास करते रहना चाहिए। उपवास करना चाहिए। इतनी अवधि व्यतीत हो गई फिर भी अहंकार खत्म नहीं होता। यह अपने अहं को समाप्त करना बहुत कठिन है। किसी संत की संगत करना चाहिए। तभी धीरे–धीरे गंगा स्नान होगा यानी भीतर कर स्नान होगा। किसी की बात में हस्तक्षेप नहीं करना, प्रतिक्रिया नहीं करनी चाहिए। बग़ैर हृदय को निर्मल किये प्रभु के दर्शन नहीं होंगे। अपना स्वनिरीक्षण करते रहना चाहिए, हृदय की मलीनता को देखते रहना चाहिए। हम दिन भर झूठ बोलते रहते हैं। हम संत् का संग नहीं करते। हम सब चोर हैं। हमें महीने में एक दिन उपवास करना या कम खाना चाहिए। राग–द्वेष से ऊपर उठना चाहिए। नाम का अभ्यास करते रहना चाहिए।

ध्यान करते समय राग–द्वेष का संकल्प–विकल्प विचार अधिक आते हैं। ऐसी स्थिति में आँख खोलकर भजन पढ़ना चाहिए। विचार आ रहे हों तो उन्हें सिर्फ देखना चाहिए, संकल्प–विकल्प नहीं उठाना चाहिए। हमारे सिलसिले में अधिक नहीं बोला जाता है। हम भी अधिक बोलने लग गये हैं। भाई बहनों को बिना बोले संतोष नहीं होता। यह ठीक है कि सबक याद हो जाता है।

(20.3.2000)

दिल की उलझन से बहुत है लड़ चुका,
ध्यान का अब जाम पीकर देख ले।
चढ़ के जाते हैं उतर सारे नशे,
ये नशा भी अब चढ़ाकर देख ले।
दूसरों में ढूंढता दिल की खुशी,
आज तू खुद में समाकर देख ले।
ढूंढता आएगा मालिक खुद तुझे,
अपने को दीवाना बनाकर देख ले।

प्राचीन मुस्लिम संतों के जीवन चरित्र

युसुफ हुसेन रयी

तपस्वी युसुफ विविध विद्याओं में निपुण और तपस्वियों में अग्रगण्य थे। महर्षि अबु तालिका और अबु सैयद के साथ उनकी गहरी दोस्ती थी। वे तपस्वी जुन्नुन मिश्र के शिष्य थे। उन्होंने बड़ी उम्र पाई थी। वे रय देश के वासी थे।

युसुफ बहुत ही खूबसूरत थे। अरबिस्तान में मुसाफिरी करते समय वे एक धनवान के यहाँ किसी काम से गये। वहाँ किसी अमीर की लड़की भी आई हुई थी। भाग्य जोग से वह युवती युसुफ की खूबसूरती को देखकर उन पर मुग्ध हो गई। मौका पाकर अमीर की लड़की ने अपना इरादा युसुफ को कह सुनाया। सुनते ही वे तो काँपने लगे। तुरन्त वहाँ से भागकर वे मिश्र देश में पहुँचे। उन दिनों महर्षि जुन्नुन का नाम मशहूर हो रहा था। युसुफ उन्हीं के पास प्रभु के नाम पर दीक्षा लेने गए। बहुत सा समय बीत गया पर जुन्नुन ने उनसे कोई बात नहीं की। चार वर्ष बीत जाने पर जुन्नुन ने उनसे पूछा– अरे युवक! मेरे पास तू किस मतलब से आया है ?

युसुफ– ''उस प्रभु के बड़े नाम के खातिर आप मुझे दीक्षा दें, मेरी यही अर्ज है।''

यह सुनकर जुन्नुन कुछ भी नहीं बोले। एक दिन जुन्नुन ने एक खप्पर युसुफ के हाथ में देकर उसे नील नदी के उस पार एक अमुक व्यक्ति को दे आने के लिए कहा।

खप्पर लेकर वे चले, पर उस खप्पर में क्या है यह जानने के लिए कौतूहलवश उन्होंने उसे रास्ते में खोल दिया। खोलते ही उसमें से एक चूहा कूदकर निकल भागा। अब तो युसुफ बहुत निराश होकर सोचने लगे कि अब उस आदमी के पास जाऊँ अथवा महर्षि के पास लौट जाऊँ ? बहुत अधिक सोच विचार करने के बाद वे खाली खप्पर लेकर उस आदमी के पास गए। उन्हें आया देखकर वह आदमी मुस्कुराकर बोला– ''युसुफ!

तुमने जुन्नुन से उस महान प्रभु के नाम पर दीक्षित होने की प्रार्थना की है ? महर्षि ने तुम्हारी सहनशीलता की परीक्षा लेने के लिए ही खप्पर में रखकर यह चूहा भेजा था। तुम तो एक चूहे को भी नहीं संभाल सके, प्रभु के नाम को कैसे संभाल पाओगे ?''

बहुत ही शर्माकर युसुफ जुन्नुन के पास लौटे। उन्हें देखकर जुन्नुन बोले– कल रात को मैंने प्रभु से सात बार प्रार्थना करके पूछा कि तुम्हें दीक्षा दूँ या नहीं ? परन्तु प्रभु ने इजाजत नहीं दी। तो भी मैंने तुम्हारी परीक्षा के लिए ऐसा किया था, उसमें भी तुम सफल नहीं हुए। अब तुम अपने देश लौट जाओ, जब समय आये तब आना।

युसुफ ने बहुत ही विनीत भाव से कहा– ''गुरुदेव मैं अपने मुल्क को लौट जाऊँगा किन्तु मेरे कल्याण के लिए मेहरबानी करके मुझे कोई उपदेश तो दें।''

महर्षि बोले– ''मैं तुम्हें तीन उपदेश देता हूँ– उत्तम, मध्यम और कनिष्ठ। जो कुछ तुमने पढ़ा लिखा है उसे भूल जाओ और अपने आप को मूर्खों से भी मूर्ख मानो, यह उत्तम उपदेश है। ऐसा ही करने से तुम्हारे और ईश्वर के बीच का पर्दा हटेगा।''

ऐसा करने में अपनी असमर्थता जताने पर जुन्नुन ने दूसरा उपदेश दिया– ''मुझे भूल जा और किसी के भी आगे मेरा व इस उपदेश का जिक्र मत करना।''

ऐसा करने में भी जब युसुफ ने असमर्थता जताई तो उन्होंने तीसरा उपदेश दिया– ''लोगों को धर्मोपदेश देना और ईश्वर के कार्य में ही लगे रहना।''

यह उपदेश सुनकर युसुफ उत्साह से बोले– ''ईश्वर की मर्जी हुई तो मैं ऐसा कर सकूँगा।''

इस पर जुन्नुन ने कहा– ''पर ख्याल रहे कि तेरे उपदेशों में ज़रा भी अहंभाव न आने पाये।''

'जो आज्ञा' कहकर युसुफ स्वदेश को लौट गये। वे रयदेश में रहते थे। उन्हें वापस आया जानकर लोग उनकी अगवानी के लिए गये, उनका

बहुत आदर सत्कार किया। अब वे उपदेश देने लगे। पर श्रोता कुछ ही दिनों में उनके उपदेश सुनकर उकता गये। कारण, उनके उपदेशों में न कोई नवीनता होती और न ही स्वर्गीय आकर्षण। चार दिन बाद ही बोलने और सुनने वाले वे अकेले ही रह गये। एक दिन उन्होंने मसजिद में उपदेश देने का इरादा जाहिर किया, पर वहाँ भी कोई सुनने वाला नहीं आया। अब क्या करना चाहिए, यह सोचकर वे अस्थिर हो गये। तभी एक अलौकिक घटना घटी जिससे युसुफ के जीवन में स्वर्गीय प्रकाश प्रकट हुआ, जिससे वे परम भक्त बन गए।

इब्राहिम खैयास नाम का एक साधक था। एक रात को उसे आज्ञा सुनाई दी कि 'युसुफ के पास जाकर कह कि वह धर्मभ्रष्ट है।' इब्राहिम को ऐसा करना उचित नहीं लगा। उन्होंने सोचा कि जो अपने आपको साधु बताता है उसे वह ऐसा कैसे कह सकते हैं। इब्राहिम इस विचार से कुण्ठित से हो गए। दूसरी व तीसरी रात फिर वही आज्ञा सुनाई दी और यह भी सुनाई दिया कि ''यदि तू युसुफ को जाकर धर्मभ्रष्ट नहीं कहेगा तो तेरा भी अहित होगा।''

आखिर उस देववाणी को सुनकर इब्राहिम को उठना पड़ा। मसजिद के दरवाजे पर जाकर उसने देखा कि युसुफ वहीं बैठे थे। उसे देखते ही युसुफ ने पूछा– ''क्या तुम कोई शास्त्रीय वचन सुना सकोगे ?'' इब्राहिम ने अपने सपने का वचन कह सुनाया। सुनते ही युसुफ इब्राहिम के पैरों में गिरकर आँसू बहाने लगे। बहुत देर के बाद सिर उठाकर वे बोले– ''इब्राहिम! सवेरे से लेकर शाम तक मेरे पास कुरान का पाठ होता रहता है, तो भी मन नहीं पिघलता है और एक आँसू नहीं गिरता। परन्तु तुम्हारा यह वचन सुनते ही मेरी तो और ही हालत हो गई है। लोग मुझे धर्मभ्रष्ट कहते हैं सो बिल्कुल वाजिब है।''

इस घटना के बाद युसुफ का जीवन ही बदल गया। वे दीन और विनयी बन गए। अनेक साधकों की संगति में रहकर उन्होंने कठोर साधनाएं की। उसके फलस्वरूप वे लोगों के श्रद्धापात्र और परम धार्मिक ऋषि बन गए।

अब्दुल नाम का एक जवान एक दिन तपस्वी युसुफ के पास आया। वह बहुत ही बदचलन व जुआरी था। युसुफ ने उससे कहा ''जिस प्रकार एक आदमी दूसरे आदमी को किसी काम से अपने पास बुलाता है, उसी प्रकार ईश्वर पापियों को अपने पास बुलाता है।''

अब्दुल यह सुनकर आर्तनाद करने लगा। अपने कपड़े फेंककर वह कब्रिस्तान की ओर चला गया। वहाँ वह बेहोश होकर पड़ा रहा। युसुफ ने स्वप्न में यह वाणी सुनी– ''युसुफ! उस पछतावा करने वाले जवान को संभाल ले।'' युसुफ ने कब्रिस्तान में जाकर उस जवान के सिर को गोद में रख लिया और खुद उसके होश में आने की राह देखने लगे। तीन दिन के बाद वह जवान होश में आया।

नेशापुर में एक सौदागर के यहाँ बहुत ही खूबसूरत दासी थी। उसका एक कर्जदार दूसरे गाँव में चला गया था। उससे मिलने के लिए सौदागर को बाहर जाना पड़ा। नेशापुर में एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं था जिस पर विश्वास करके वह अपनी दासी को उसके पास छोड़कर जा सकता। बहुत सोचने के बाद उसे तपस्वी अबु उस्मान खैरी का ध्यान आया। दासी को कुछ दिन के लिए अपने पास रखने के लिए उसने उनसे विनती की। पहले तो उन्होंने मंजूर नहीं किया, परन्तु बहुत आग्रह करने पर उस्मान ने उसका कहना मान लिया। वह दासी उस्मान के यहाँ आकर रहने लगी। दैवयोग से एक दिन उस्मान की नज़र उस दासी पर पड़ी। उसकी उस निहायत ही खूबसूरती को देखकर वे मोहित हो गये। उनका चित्त डाँवाडोल हो गया। अनेक उपाय करने पर भी वह स्थिर नहीं हुआ। धर्माचार्य अबु हाफिज के पास जाकर उन्होंने अपने दिल की हालत कह सुनाई। हाफिज ने उन्हें महर्षि युसुफ के पास जाने की सलाह दी। ढूँढ़ते– ढूँढ़ते वे युसुफ के शहर में पहुँचे। लोगों ने उन्हें देखकर कहा– ''आप निर्मल चरित्र वाले हैं, सूफी हैं, फकीरी वेश में हैं। बड़े अचरज की बात है, आप युसुफ के पास जाना चाहते हैं। उस अधर्मी और बदचलन से आपको क्या सरोकार है ? उससे मेल जोल करने से तो बेइज़्ज़ती ही होगी। सोच समझकर आप वापस लौट जायें।''

ऐसा सुनकर अबु उस्मान खिन्न होकर नेशापुर लौट आये। लोगों के अपवाद से डरकर उन्हें वापस आया देखकर अबु हाफिज ने उन्हें कह सुनकर फिर युसुफ के पास भेजा। अबकी बार उन्होंने लोगों से युसुफ की पहले से भी ज़्यादा निन्दा सुनी। तब भी उन्होंने लोगों से कहा कि ''मुझे उनसे बहुत ज़रूरी काम है, उनका घर बताने की मेहरबानी करें।''

लोगों के बताने पर वहाँ पहुँचकर उन्होंने देखा झोपड़ी के दरवाजे पर एक तेजस्वी वृद्ध पुरुष बैठे हैं और उनके पास एक बोतल व प्याला पड़ा है। अबु उस्मान ने जाकर सलाम किया। युसुफ ने उनसे बहुत अच्छी–अच्छी बातें की। उनकी विवेकपूर्ण बातें सुनकर उस्मान ने पूछा ''आपकी कांति इतनी तेज है और आपकी जबान में इतनी मिठास और उपदेश भरा है फिर भी आपका आचरण ऐसा क्यों है ?''

युसुफ बोले– ''मेरे पास पानी के लिए कोई बर्तन नहीं है, इसलिए इस बोतल को साफ करके उसमें पानी भर लिया है। कोई प्यासा चला आए तो उसके लिए यह प्याला रख छोड़ा है।''

उस्मान ने फिर पूछा– ''आप ऐसा क्यों करते हैं ? लोग व्यर्थ ही आप पर भांति–भातिं के आरोप लगाते हैं, आपकी निन्दा करते हैं।''

युसुफ ने जवाब दिया– ''मेरी निन्दा हो इसी के लिए तो मैं ऐसा करता हूँ। अगर मैं बदचलन और निंदित मशहूर हो जाऊँ तो फिर कोई सौदागर अपनी खूबसूरत दासी को क्यों मेरे पास रख जायेगा ? यह कितने फायदे की बात है''

यह सुनकर उस्मान युसुफ के पैरों पर गिरकर रोने लगे।

रात भर जागरण करने के कारण युसुफ हुसेन रयी की आँखें सदा सुर्ख रहती। शरीर दुर्बल हो गया था। किसी ने उनकी बहन से उनके तप के बारे में पूछा तो वे बोलीं– ''युसुफ रात की नमाज़ ख़तम करके सुबह होने तक स्थिर होकर आसन पर खड़े रहते हैं।''

ऐसा करने का कारण पूछने पर युसुफ ने बतलाया– ''रात की नमाज़ पढ़ने के लिए खड़ा होता हूँ तो ईश्वर की महिमा के अनेक गूढ़ तत्व

अन्तःकरण में स्फुरित होने लगते हैं, जिनके कारण मैं नीचे बैठना ही भूल जाता हूँ और खड़े–खड़े ही रात बीत जाती है।''

मरते समय युसुफ ने कहा था– ''हे परमेश्वर! मैंने अपना कर्त्तव्य लोगों के प्रति वाणी द्वारा और तेरे प्रति कार्य के द्वारा बजाया है। मेरे अपराधों को क्षमा करना।''

उपदेश वचन

1. जो यह जानते हैं कि ईश्वर हमारा हरेक काम देखता है, वे ही बुरा काम करने से डरते हैं।
2. जो गम्भीरता पूर्वक ईश्वर का स्मरण करते हैं, वे ही सब दूसरी चीजों को भूल सकते हैं।
3. ईश्वर के भजन पूजन में जो दुनिया की सारी चीजों को भूल जाते हैं, उन्हें सब चीज़ों में ईश्वर ही ईश्वर दिखाई देने लगते हैं।
4. जो ईश्वर को प्रेम करते हैं उन्हें लोगों की ओर से तो क्लेश और अपमान ही मिलता है। किन्तु खुदा के बन्दे भी ऐसे होते हैं कि वे उसके बदले में लोगों के ओर दया ही दिखाते हैं।
5. सभी हालतों में प्रभु और प्रभु के भक्तों का दास होकर रहना ही अनन्य और एकनिष्ठ भक्ति करना है।
6. अपने प्यारे के श्रवण, मनन, कीर्तन आदि में जो बाधायें हों उन्हें दूर करना सच्चे प्रभु प्रेम का चिन्ह है।
7. भीतर से प्रभु की प्रगाढ़ भक्ति करना और बाहर से उसे प्रसिद्ध न होने देना साधुता का मुख्य चिन्ह है।
8. ईश्वर की उपासना में मनुष्य ज्यों–ज्यों डूबता जाता है, त्यों–त्यों प्रभु दर्शन की लालसा बढ़ती जाती है। यदि एक पल के लिए भी उसे साक्षात्कार हो जाता है तो वह उस स्थिति की अधिकाधिक इच्छा में लीन रहता है।

9. विशुद्ध प्रभु प्रेम जगत में एक दुलर्भ पदार्थ है। मन में से कपट बुद्धि को दूर करने का जब मैंने प्रबल प्रयत्न किया, तब उस प्रभु ने अनेक सद्‌गुणों के रूप में आकर मेरे हृदय पर अधिकार कर लिया।
10. जो चिन्तन करके ईश्वर को पाता है वही उसकी मानसिक पूजा कर सकता है।

भगवान में विश्वास रखो

एक अमीर आदमी था। उसने समुद्र में अकेले घूमने के लिए एक नाव बनवाई।

छुट्टी के दिन वह नाव लेकर समुद्र की सैर करने निकला। आधे समुद्र तक पहुंचा ही था कि अचानक एक जोरदार तूफान आया। उसकी नाव पूरी तरह से तहस–नहस हो गई लेकिन वह लाईफ जैकेट की मदद से समुद्र में कूद गया। जब तूफान शांत हुआ तब वह तैरता–तैरता एक टापू पर पहुंचा लेकिन वहाँ भी कोई नहीं था। टापू के चारो ओर समुद्र के अलावा कुछ भी नजर नहीं आ रहा था। उस आदमी ने सोचा कि जब मैंने पूरी जिदंगी में किसी का कभी भी बुरा नहीं किया तो मेरे साथ ऐसा क्यूँ हुआ ?

उस आदमी को लगा कि भगवान ने मौत से बचाया तो आगे का रास्ता भी भगवान ही बताएगा। धीरे–धीरे वह वहाँ पर उगे झाड़–पत्ते खाकर दिन बिताने लगा। अब धीरे–धीरे उसकी श्रध्दा टूटने लगी,भगवान पर से उसका विश्वास उठ गया। उसको लगा कि इस दुनिया में भगवान है ही नहीं। फिर उसने सोचा कि अब पूरी जिंदगी यहीं इस टापू पर ही बितानी है तो क्यूँ ना एक झोपडी बना लूँ ?

फिर उसने झाड़ की डालियों और पत्तों से एक छोटी सी झोपड़ी बनाई। उसने मन ही मन कहा कि आज से झोपड़ी में सोने को मिलेगा आज से बाहर नहीं सोना पड़ेगा। रात हुई ही थी कि अचानक मौसम बदला बिजलियाँ जोर–जोर से कड़कने लगी! तभी अचानक एक बिजली उस झोपड़ी पर आ गिरी और झोपड़ी धधकते हुए जलने लगी। यह देखकर वह आदमी टूट गया आसमान की तरफ देखकर बोला ''तू भगवान नहीं, राक्षस है। तुझमें दया जैसा कुछ है ही नहीं, तू बहुत क्रूर है!''

वह व्यक्ति हताश होकर रो रहा था कि अचानक एक नाव टापू के पास आई। नाव से उतरकर दो आदमी बाहर आये और बोले कि हम तुम्हें बचाने आये हैं। दूर से इस वीरान टापू में जलता हुआ झोपड़ा देखा तो लगा कि कोई उस टापू पर मुसीबत में है। अगर तुम अपनी झोपड़ी नहीं जलाते तो हमें पता नहीं चलता कि टापू पर कोई है।

उस आदमी की आँखो से आँसू गिरने लगे। उसने ईश्वर से माफी माँगी और बोला ''मुझे क्या पता कि आपने मुझे बचाने के लिए ही मेरी झोपड़ी जलाई थी।''

आगामी भण्डारों की सूचना

मई 2019 का भण्डारा, झाझा

पूज्य दादा गुरुदेव डॉ. श्रीकृष्णलाल जी महाराज की पुण्य तिथि के अवसर पर भण्डारा 16–18 मई 2019 को झाझा में होना निश्चित हुआ है। कार्यक्रम स्थल व अन्य जानकारी इस प्रकार है:–

सत्संग कार्यक्रम स्थानः–

शिव नन्दन झा स्मारक
टॉउन हॉल, आकाश कॉलोनी
झाझा

सम्पर्क व्यक्तिः–

1. भीम प्रसाद बरनवाल – 8409131894, 9135367539
2. जयनारायण ठाकुर – 9572815008, 8210917446
3. भगवान प्रसाद बरनवाल – 9097119352
4. दामोदर प्रसाद बरनवाल – 9931642020

नोटः– यह स्थान रेलवे स्टेशन से एक कि.मी. की दूरी पर है।

जून 2019 का भण्डारा, भभुआ

पूज्य गुरुदेव डॉ. करतार सिंह जी साहिब के जन्म दिवस एवं पुण्य तिथी पर आयोजित भण्डारा दिनांक 14, 15, 16 जून 2019 को भभुआ में होना सुनिश्चित हुआ है।

सत्संग कार्यक्रम स्थानः–

होट्ल कुबेर
भभुआ ब्लॉक (प्रखण्ड कार्यालय) के सामने
कचहरी रोड, भभुआ, कैमूर

सम्पर्क व्यक्तिः–

1. डॉ. डी.के. श्रीवास्तव (दिनेश बाबू) – 9431089538, 8766358607
2. श्री भुवनेश्वर नाथ वर्मा (भुवन बाबू) – 9431844712
3. श्री मुक्तेश्वर पाण्डेय (मोहित जी)– 9431680787, 9430207756

नोटः– सत्संग स्थल से नज़दीकी रेलवे स्टेशन भभुआ रोड है जहाँ से सत्सग स्थल की दूरी 17 कि.मी. है।

मंत्री
रामाश्रम सत्संग

राम संदेश के नियम

1. आध्यात्मिक विद्या के गुप्त और अनुभवी रहस्यों तथा सदाचार–शिक्षा को सरल भाषा में जनता तक पहुँचाना हमारी राम सन्देश पत्रिका का मुख्य उद्देश्य है।
2. राम–सन्देश में आत्मिक, नैतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक उन्नति के लेख ही छपते हैं, राजनैतिक या रोमांचक लेख नहीं। रचनाओं में काट–छाँट करने अथवा छापने या न छापने की स्वतंत्रता सम्पादक को है।
3. राम सन्देश का वर्ष जनवरी में आरम्भ होता है। वार्षिक चन्दा 20 (बीस) रुपये है। एक वर्ष से कम तथा आजीवन ग्राहक नहीं बनाये जाते। चन्दा दशहरा भंडारों में या मैनेजर, राम संदेश को, 9–रामाकृष्णा कॉलोनी, जी. टी. रोड, ग़ाजियाबाद (उ.प्र.) 201009 के पते पर दिसम्बर के अंत तक अवश्य भिजवा दें।
4. राम सन्देश डाक द्वारा नहीं भेजा जाता है। इसका वितरण भंडारों पर ही किया जाता है। कृपया अपनी प्रति लेना न भूलें।

राम संदेश

रजिस्टर्ड ऑफिस

9–रामाकृष्णा कॉलोनी, जी.टी. रोड,
गाज़ियाबाद–201009

मुद्रक, प्रकाशक व संपादक : डॉ. शक्ति कुमार सक्सेना

मुद्रण : अंकोर पब्लिशर्स (प्रा.) लिमिटेड, बी–66, सैक्टर–6, नोएडा–201301